बी० ए० द्वितीय वर्ष (paper - III)

सेतुबन्ध की गाथा

1. कह वि ठवेंति पवंगा समुद्ददंसणविसाअविमुहिज्जन्तम्।
गलिअगमणाणुराअं पडिवन्थणिअन्तलोअणं अप्पाणम्॥

अर्थात = सागर को देखकर उत्पन्न विषाद से व्याकुल जिनका वापस लौट जाने का अनुराग नष्ट हो गया है तथा पलायन के मार्ग से लौट आये हैं नेत्र जिनके, ऐसे वीर वानर किसी प्रकार अपने आपको ढाढस बँधा रहे हैं।

2. णट्टारम्भचक्खुहिआ जस्स भउब्भन्त मच्छपहअजलरआ
होन्ति सलिलुद्धुमाइ अधूमाअन्त वडवमुहा मअरहरा॥

अर्थात = समुद्र (सातों समुद्र) मानो शिव के नृत्य से क्षुब्ध, भय से उद्भ्रान्त (इधर-उधर भागते हुए) मत्स्यों से आहत जलवेगवाला तथा सलिल से शान्त होने के करण धूमायमान वड़वाग्नि से युक्त हो रहे हैं।

3. इच्छाइव धणरिद्धी जोव्वणलद्ध व्व आहिजाईअ सिरी।
दुक्खं संभविज्जइ बन्धच्छाआइ अहिणवा अत्थाई॥

अर्थात = संसार में इच्छानुसार धन-दौलत और कुलीनता से जवानी में प्राप्त लक्ष्मी दोनों एक साथ अत्यन्त दुर्लभ है उसी प्रकार सुन्दर छन्द अलंकारो से अलंकृत एवं रमणीय अर्थ का योग अत्यन्त कठिनता से संभव हो सकता है।

4. गमिआ कलम्बवाआ दिट्ठ मेहन्धआरिअं गअणअलं।
सहिओ गज्जिअसद्दो तह वि हु से णत्थि जीविए आसङ्घो॥

P.T.O

अर्थात = वर्षा ऋतु में किसी प्रकार राम ने कदम्ब पवन को झेला, मेघ से अन्धकारित गगन तल को देखा और गर्जन शब्द (मेघ-गर्जन) को सहा लेकिन राम ने सीता से पुनर्मिलन की आशा में सबको सहन लिया।

तं तिअसबन्दिमोक्खं समत्थतेलोक्कहिअअसल्लुद्धरं।
सुणह अणुराअइण्हं सीआदुक्खक्खअं दहमुहस्स वहं।।

अर्थात = देववन्दिनियों के मोक्ष स्वरूप। ऐसी प्रसिद्ध है कि दुराचारी रावण ने देवों-युवतियों का अपहरण कर अपने राज्य में लाया था जब रावण मारा जाएगा तब वे कारागार से मुक्त होंगी। यह दसमुहवह का विशेषण है अर्थात = राम के द्वारा रावण का वध कर सीता को मुक्त कर लिया गया है। इसका दूसरा नाम दसमुहवह है।

6. रइअरकेसरणिवहं सोहइ धवलब्भदल सहस्सपरिग
सहस्सपरिगअं।
महुमहदंसणजोग्गं पिआमहुप्पत्तिपङ्कअं व
णहअलं।।

अर्थात = सूर्य किरण रूप केसर समूह से युक्त, धवल मेघ खंड रूप सहस्रों दल से परिगत और मधुमथन (विष्णु) के दर्शन योग्य पितामह (ब्रह्मा) की उत्पत्ति कमल के समान आकाश सुशोभित हुआ।

येन प्रवरसेनन धर्मसेतु विवृणवता
परः प्रवरसेनोपि जितः प्राकृतसेतु कृत।।

अर्थात = यशोवर्मा (८८५-१०५ई०) अपनी प्रवरसेन द्वारा स्थापित धर्मसेतुओं से दूसरे प्रवरसेन को पीछे छोड़ गया क्योंकि उसने एक प्राकृतसेतु (सेतुबन्ध महाकाव्य) का निर्माण किया था।